कहाँ बसेरा होगा ...

गाड़ी छूटी बैठ न पाये, कहाँ बसेरा होगा ?
साँझ आ गई थकित हुआ तन, कैसे सबेरा होगा ?
बात नहीं करते हैं कोई, अनजाने हैं राही
समय अमूल जान न पाये, व्यर्थ बैठ गये छाँही।
हुई गति साँप–छछुंदर, केरी क्या आगे अब होगा ?
गाड़ी छूटी........

दमड़ी पास न खाना लाये, मिले वहीं खायेंगे।
अपनी–अपनी आफत टारें, गर कैसे भायेंगे
कर्म किया न भाग्य भरोसे, भूखे मरना होगा।
गाड़ी छूटी.......

धीरे–धीरे वे भी गये थे, जो पास में बैठें।
निर्जन जान बहुत डर लागे, मद में रहे थे ऐंठे
ज्यों अहि निकले घसलन, कूटे बल का घटना होगा
गाड़ी छूटी ....

भ्रम वस ढोंग कुरीति, आराधी मनमानी सुख पाया
अहंकार वस कर्म भूल गये, दीन–दुःखी को सताया
राह काटकर बिल्ली भागी, रूके डरे क्या होगा ?
खुद की करनी रब पर थोपे, जान–जान ही भागे
संसारी राहें बेढंगी, अगणित काँटें लागे
शूल–शूल में रहे निरन्तर, शूल ही सहना होगा
गाड़ी छूटी ....

रहो प्रेम से आपस में, ना मानवता को त्यागें
ज्ञान अनमोल सार जीवन का, दूर–दूर न भागे
अविनाशी नित शब्द, शिरोमणी आना ना जाना होगा।
गाड़ी छूटी ....

डा॰ देवीदीन अविनाशी